स्वच्छन्दतावाद

एन. मोहनन

प्रोफसर एमरिटस (यू.जी.सी)
हिन्दी विभाग
कुसाट, कोच्ची – 22
9447056148

हिन्दी का स्वच्छन्दतावाद अंग्रेज़ी के रोमाण्टिसिसम की प्रेरणा से उद्भूत एवं पल्लवित काव्यधारा है जो 1916 से 1936 तक हिन्दी काव्य साहित्य के नभोमण्डल में सुशोभित रहा। इसने हिन्दी कविता को चार प्रतिभाधनी मनीषियों को भी प्रदान किया - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पंत और महादेवी वर्मा। इन चारों के समय याने कि छायावाद को आधुनिक हिन्दी कविता का स्वर्णिम युग भी माना जाता है। यह काव्यधारा भारतीय नवजागरण का भी परिणाम है। भारत में नई शिक्षा पद्धति के प्रचार के कारण आत्मबोध की जो नई लहर उभर आयी उसने बहुत सारे अनाचारों, अंधविश्वासों एवं अमानवीय वृत्तियों के खिलाफ आवाज़ उठाने की क्षमता प्रदान की। यह भी नहीं अंग्रेज़ी शिक्षा, विदेशी साहित्य एवं संस्कारों से परिचित व्यक्तित्व यहाँ भारत में भी नए नए प्रयोग किए जाने लगे। यूरोप में रिणैसान्स के बाद साहित्य के क्षेत्र में रोमाण्टिसिम का आगमन हुआ। यह साहित्यिक धारा जो है उस समय तक प्रचलित काव्य मानसिकता को चुनौती देते हुए एक नितांत भिन्न मानसिकता को प्रश्रय देनेवाली थी। उसकी मूल चेतना प्रेम और सौन्दर्य (Love and Beauty) थी।

प्रकृति के अक्षय सौन्दर्य को तथा स्त्री लावण्य को विषय वस्तु बनाकर इस धारा के कवि मूलत: वेड्सवर्थ, कॉल रिड्ज, शेली, कीट्स, बायरन् आदि सचमुच अपने अन्तरतम की भावनाओं का स्वच्छन्द विसर्जन कर रहे थे। यह सचमुच आत्माभिव्यक्ति की नूतन धारा थी। ये कवि किसी भी प्रकार के नियमों के तहत रचना करना नहीं चाहते थे। वे स्वच्छन्द अभिव्यक्ति के पक्षधर थे। कविता केलिए बनाए गए सारे नियमों को तोडते हुए स्वतंत्र अभिव्यक्ति करने वाले थे ये कवि। नियम बन्धन हैं, वे आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्र धारा को भंग करने वाले हैं। इसलिए नियमों एवं काव्य क्षेत्र में प्रचलित पुराने काव्यांगों को नकारते हुए बिलकुल नए ढंग से अपने अन्तर्मन की नितांत वैयक्तिक अनुभूतियों को नूतन अभिव्यक्ति पद्धति के तहत संप्रेषित करने का कार्य इन कवियों ने किया है। इस नूतन अभिव्यक्ति प्रक्रिया का नाम है रोमाण्टिसिसम याने स्वच्छन्दतावाद।

विक्ट ह्यूगो ने इस काव्य धारा को Literature of Liberation विमोचन का साहित्य कहा है। यह काव्य धारा विमोचन की है, मुक्ति की है नहीं तो स्वतंत्रता की है। विमोचन प्रचलित काव्य रूढियों, मानसिकताओं एवं उपादानों से है। इसलिए रचनाकारों को सारे रूढ नियमों की जकड से मुक्त होकर स्वतंत्र अभिव्यक्ति का आह्वान करने वाली काव्य धारा है यूरोप की रोमाण्टिक काव्यधारा। यह वहाँ की सामाजिक परिस्थितियों के खिलाफ के विद्रोह तथा उससे मुक्ति की कामना भी थी। पॉप के खिलाफ के विद्रोह के परिणाम स्वरूप जिस प्रोटेस्टेण्ट का उदय हुआ उसी का प्रभाव साहित्य जगत् में भी पड जाना स्वाभाविक है। क्लासिकल मानसिकता के आधिपत्य के विरुद्ध का साहित्यिक विद्रोह है रोमाण्टिसिसम। वेट्सवर्थ और कालरिड्ज ने इसको नेतृत्व दिया। इन दोनों ने मिलकर "लिरिकल बल्लार्ड्स" (1798) रोमाण्टिक कविताओं का जो संकलन है उसकी लंबी भूमिका लिखी वह सचमुच अंग्रेज़ी रोमाण्टिसिसम का घोषणापत्र बन गया। 1800 में प्रकाशित दूसरे संस्करण की जो भूमिका वेर्ड्सवर्थ और कॉलरिड्ज ने मिलकर लिखी उसमें इस काव्यधारा के उद्भव और उद्देश्यों के बारे में स्पष्टत: कहा गया है।

मूल-उद्देश्य कलाकार का स्वातंत्र्य ही है। कला सचमुच वैयक्तिक है इसलिए कला या साहित्य में वैयक्तिक अनुभूतियों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति का होना अनिवार्य है। कवि को संवेदनशील होना चाहिए, उदार आत्मा का प्राणी भी। मनुष्य एवं प्रकृति के बीच निकटता का संबन्ध वाँछित है। कविता सशक्त भावनाओं की सहजाभिव्यक्ति है। कवि लिखता है जन साधारण के लिए। अत: कविता जन साधारण की भाषा में लिखी जानी चाहिए। गद्य और पद्य के भेद को मिटाना चाहिए। अभिजात भाषा का अस्वीकार करके लोक भाषा के शब्द भण्डार को स्वीकारना श्रेयस्कर है। सामान्य एवं गँवार लोगों की भाषा काव्यात्मक हो सकती है। जिस भाषा का जन साधारण से संपर्क नहीं है वह विकृत भाषा है। इसलिए सहज भाषा ही कविता केलिए उपयुक्त भाषा है। काव्य वस्तु के सन्दर्भ में भी भेदभाव नहीं होना चाहिए। कोई भी विषय कविता का कथ्य बन सकता है। यही काव्य का प्रजातांत्रीकरण है।

कॉलरिड्ज ने भी काव्य संबन्धी अपना अभिमत उस भूमिका में प्रस्तुत किया है। उनके मुताबिक कविता में बाह्य और अंतर का मिलाप होता है। इसकेलिए प्रतिभा की ज़रूरत है। कवि को दार्शनिक होना ज़रूरी है क्योंकि वह सर्जक है, मानवीयता का सर्जक। काव्य का परम प्रयोजन कॉलरिड्ज के मत में आनन्द है। वह आनन्द भौतिक वस्तुओं के उपभोग से मिलने वाला आनन्द नहीं बल्कि एक अलौकिक, अनिर्वचनीय आनन्द है। इसकेलिए कल्पना तत्व मुख्य है। स्वच्छन्दता के पीछे यही तत्व सक्रिय है। एक प्रतिभा ही कल्पना के तहत अलौकिक आनन्द का सृजन कर सकती है जिससे मानवीयता का सृजन संभव हो। कल्पना वस्तु और मन के बीच के भेद को मिटा देती है। इसमें भाषा की अहम भूमिका है। भाषा सचमुच रचनाकार का चश्मा है जिससे वह व्यक्ति, समाज, देश और राष्ट्र के यथार्थ को देखता है, कल्पना के ज़रिए उस स्वतंत्रता बोध की उद्घोषणा करता है। इसलिए पाश्चात्य रोमाण्टिसिसम सचमुच कविता को लेकर एक अलग दृष्टि की पहचान है, सभी बन्धनों से उन्मुक्त होने की कामनाओं का दस्तावेज़ भी।

हिन्दी में यह स्वच्छन्दतावाद छायावाद में परिणत हो गया। मुकुटधर पाण्डेय ने 1920 में श्री शारदा पत्रिका में छायावाद शीर्षक से चार लेख लिखे। इसके पहले भी कहीं कहीं छायावाद शब्द का उल्लेख हो चुका था। पर छायावाद संबन्धी व्यवस्थित पहला लेख मुकुटधर पाण्डेय जी का था। उन्होंने कहा कि छायावाद एक विशेष दृष्टि है जिसमें आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि निहित है। वर्तमान से प्रत्यक्षत: जुडे बिना उससे ऊर्जा ग्रहण करके प्रातिभा संस्पर्श से एक विशेष भावलोक का सृजन छायावाद की विशेषता है। वह कभी भी वर्तमान से पलायन नहीं बल्कि अपने जीवनानुभवों के आत्ममंथन से प्राप्त अनोखे भावरस का संप्रेषण है। सांकेतिकता के माध्यम से सीधे सीधे कहने की बजाय किन्हीं आकर्षक उपादानों के माध्यम से प्रस्तुत करने की शैली, नहीं तो दृष्टि है छायावाद। इन उपादानों में उन्होंने प्रमुखता दी प्रकृति और स्त्री को। दोनों ईश्वर की अनुपम सृष्टि हैं। उन्हीं के ज़रिए अपनी अन्तरात्मा के भावों को संप्रेषित करने के कारण कविता कहीं मांसल, कहीं अस्पष्ट, कहीं दुरूह दिखाई देती है। लेकिन छायावादी कवि या उनकी कविताएँ कभी भी दुरूह या अस्पष्ट नहीं। कवि के भाव को या आत्मनिष्ठ अन्तर्दृष्टि को पकड पाने पर सब कुछ स्पष्ट हो उठते हैं। वह भाव प्रकाशन का एक नया मार्ग है। हिन्दी कविता के क्षेत्र में इस नितांत भिन्न अभिव्यक्ति प्रक्रिया के आगमन को देख कर कवि पंत ने श्रीधर पाठक के प्रति श्रद्धा एवं नमन अर्पित करते हुए पूछा,

"प्रथम रश्मि का आना तू ने कैसे पहचाना"

यहाँ 'प्रथम रश्मि' छायावादी काव्यशैली और "चिडिया" कवि श्रीधर पाठक है। इस नूतन अभिव्यक्ति प्रक्रिया से सचमुच आधुनिक हिन्दी काव्य समृद्ध व संपुष्ट हो गया। वैसे यह काल आधुनिक हिन्दी काव्य का सौष्ठव काल बन गया जैसे भक्ति काल को हिन्दी साहित्य का सुवर्णकाल कहा जता है। छायावाद ने पद्य को ही नहीं गद्य को भी संपुष्ट कर दिया जब कवि आलोचक भी बने। महादेवी वर्मा प्रसाद, पंत और निराला के गद्य इसकेलिए पर्याप्त प्रमाण हैं। उनके गद्य द्विवेदीयुगीन गद्य नहीं उसमें अभिधा की अपेक्षा गहनता एवं व्यंजकता अधिक हैं। गोया कि छायावाद ने काव्यभाषा को तथा संवेदना को इतना गहन एवं सघन बनाया कि बाद के कवियों को अभिव्यक्ति के नए नए रास्ते खुले मिले।

हिन्दी का छायावाद सचमुच स्वच्छन्दतावाद और रहस्यवाद का संयोग है। अंग्रेज़ी के रोमाण्टिसिसम वास्तव में हिन्दी का स्वच्छन्दतावाद है जिसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ प्रेम और सौन्दर्य है। पर हिन्दी का छायावाद स्वच्छन्दतावाद और अंग्रेज़ी के मिस्टिसिसम याने रहस्यवाद का जोग है। रहस्यवाद दरअसल अज्ञात के प्रति जिज्ञासा का नाम है। छायावाद की पंक्ति पंक्ति में अज्ञात के प्रति जिज्ञासा प्रकट है। पर वह अज्ञात एक अतीन्द्रिय शक्ति तो है पर उसका कोई रूप नहीं, नाम नहीं बल्कि उसके सान्निध्य का एहसास प्रकृति के जड-चेतन में कर सकते हैं। अत: हिन्दी का छायावाद रोमान्टिससम और मिस्टिसिसम का संयोग ही है। उसमें प्रेम और सौन्दर्य के साथ अज्ञात के प्रति जिज्ञासा का भाव भी निहित है। छायावादी कवि मात्र प्रकृति में अज्ञात शक्ति का सान्निध्य देखते नहीं, वे तो नारी सौन्दर्य में भी एक रहस्यात्मक शक्ति का सान्निध्य देखते हैं इसीलिए वे नारी को पूजनीय मानते हैं। छायावादी कविता को लेकर जो क्लिष्टताएँ जारी हैं उन्हें इस प्रकार हम दूर कर सकते हैं। और एक बात ध्यान देने की है कि सभी छायावादी कवि आध्यात्मिक थे। प्रसाद मूलत: शैव थे, पंत अरविन्द दर्शन से प्रभावित थे, महादेवी प्रकृति के कण कण में प्रिय को ढूँढनेवाली थी तो निराला पूर्णत: वेदान्ती थे। इसलिए पंत और निराला को मार्क्सवादी कहना उन्हें गलत समझना मात्र है। उनकी कविताओं में कहीं कहीं श्रमिकों, किसानों तथा समाज के पीडितों के यथार्थों का चित्रण और मार्क्सवादी दर्शन से लगाव दीखता तो है पर वह बिलकुल आनुषंगिक मात्र था। वे सब मूलत: अध्यात्मवादी थे साथ ही साथ प्रगतिशील भी।

इस प्रकार देखें तो छायावाद पाश्चात्य रोमान्टिसिसम का भारतीयकरण है। रोमान्टिसिस और मिस्टिसिसम के मेलजोल से "जो नयी काव्य शैली उभरी जिसका नाम है छायावाद। यह एक विशिष्ट अभिव्यक्ति प्रक्रिया है जिसमें कवि अपनी अन्तरात्मा की अनुभूतियों की वैयक्तिक प्रतिक्रिया बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के स्वच्छन्द एवं तटस्थ होकर प्रस्तुत करता है।

ये पलायनवादी नहीं। इन्होंने अपनी वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों की प्रतिकूलताओं को समझ कर अपनेलिए अनुकूल भाव जगत् का निर्माण कल्पना के सहारे करते हुए अपने अंतरतम का खुलासा तो किया है जिसमें राष्ट्र के प्रति समर्पण है समाज के प्रति सम्मान है। कल्पना के कारण वे गलत समझे गए। कल्पना सचमुच अभिव्यक्ति प्रक्रिया के लिए अनुकूल नीड के निर्माण का उपादान मात्र थी। उसके सारे कहन व्यापक थे। उसके संकेतों को पकड़ पाने की अक्षमता के कारण तत्कालीन आलोचकों ने उन्हें गलत समझ कर पूरे छायावाद के कवियों तथा उनकी सृजनात्मकताओं के प्रति अन्याय ही किया है। छायावाद अपने समय के स्पन्दनों को उसकी पूरी समग्रता में समेट कर की गयी स्वच्छन्द प्रतिक्रियाओं का मूर्त रूप है। उसमें अपने समय की पूरी त्रासदी सूक्ष्मातिसूक्ष्म ढंग से अभिव्यक्त हुई है। बाद की कविताओं में इसका ही व्यापकत्व हुआ है।